

U.G. 5th Semester Examination - 2020**HINDI****[HONOURS]****Discipline Specific Elective (DSE)****Course Code : HINH-DSE-T-01****नाटक और कथा साहित्य**

Full Marks : 60

Time : 2½ Hours

*The figures in the right-hand margin indicate marks.**Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2×10=20

- क) 'गबन' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष लिखिए।
- ख) गनी मियां कितने साल बाद अमृतसर लौटा था?
- ग) 'कफन' कहानी का प्रकाशन सबसे पहले किस पत्रिका में हुआ था?
- घ) 'सोमा बुआ' किस कहानी की पात्र है?
- ङ) "गाहनों का मर्ज इस गरीब देश में जाने कैसे फैल गया, जिन लोगों को भोजन का ठिकाना नहीं वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं।"—उक्त कथन किसका है?
- च) 'अंधेर नगरी' नाटक के दो पात्रों का नाम लिखिए।

- छ) 'गबन' उपन्यास के दो नारी पात्रों का नाम लिखिए।
- ज) भीष्म साहनी की एक कहानी संग्रह का नाम लिखिए।
- झ) 'दुनिया' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष हुआ था?
- ञ) "निर्मला के बाद गबन हिंदी साहित्य के यथार्थवाद में एक और आगे बढ़ा हुआ कदम है।"—उक्त कथन किसका है?
- ट) भारतेन्दु के पौराणिक नाटक कौन-कौन हैं?
- ठ) 'पुरस्कार' कहानी के अंत में मधुलिका ने महाराज से अपने लिए क्या पुरस्कार मांगा?
- ड) "जालपा भारत का उगता हुआ नारीत्व है।"—उक्त कथन किसका है?
- ढ) 'छोटे-छोटे ताजमहल' कहानी के रचनाकार कौन है और इसका प्रकाशन वर्ष क्या है?
- ण) 'उन्मादिनी' किस विधा की रचना है और इसके रचनाकार कौन है?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं चार अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

5×4=20

- क) "जब तक गले में जुआ नहीं पड़ा है, तभी तक यह कुल्लेले निकम्मों को राह पर लाने का इससे बढ़कर और कोई उपाय नहीं।"
- ख) "यों तो मैं कहीं आऊँ-जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता, और फिर कल किशोरी के यहां से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों का कैसा बुलावा! वे लोग तो मुझे अपनी

मां से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्टी और भण्डारघर सौंप दे, पर उन्हें अब कौन समझावे? कहने लगे, तू ज़बरदस्ती दूसरों के घर में टांग अड़ाती फिरती है।”

- ग) “तू बड़ा बेदर्द है बे। साल भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई।” “तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पाँव पटकना नहीं देखा जाता है।”
- घ) “आसपास के घरों की खिड़कियां तब बंद हो गई थी। जो लोग इस दृश्य के साक्षी थे, उन्होंने दरवाजे बंद करके अपने को इस घटना के उत्तरादायित्व से मुक्त कर लिया था। बंद किवाड़ों में भी उन्हें देर तक जुबैदा, किश्वर और सुलताना के चीखने की आवाजें सुनाई देती रही। रक्खे पहलवान और उसके साथियों ने उन्हें भी उसी रात पाकिस्तान दे दिया, मगर दूसरे तबील रास्ते से। उनकी लार्शें चिराग के घर में न मिलकर बाद में नहर के पानी में पाई गई।”
- ङ) “इस घर पर जो छाया घिरी हुई है, वह अज्ञात रह कर मानो मुझे भी वश में कर रही है, मैं भी वैसा ही नीरस, निर्जीव सा हो रहा हूँ, जैसे, हाँ, जैसे यह घर, जैसे मालती।”
- च) “उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरिता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह अंधकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो फिर सहसा सोचने लगी, वह क्यों सफल हो श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाए।”

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×2=20

- क) हिंदी रंगमंच की परंपरा और नए प्रयोगों के आलोक में ‘अंधेर नगरी’ नाटक की समीक्षा कीजिए।
- ख) भारतेंदु के ‘अंधेर नगरी’ नाटक की समकालीनता पर प्रकाश डालिए।
- ग) ‘मलबे का मालिक’ यद्यपि विभाजन के दौर की कहानी है किंतु आज भी इसकी प्रासंगिकता है, इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करें।
- घ) “गैंग्रीन एक विवाहित नारी के अभावों में घुटते हुए व्यक्तित्व की त्रासदी का चित्रण है।” —उक्त कथन पर विचार कीजिए।